मूल्य : एक प्रति ` 0.50
वार्षिक ` 5.00

नेशनल बुक ट्रस्ट साक्षरता संवाद

उत्तर - साक्षरताकर्मियों के लिए

फरवरी 2012 वर्ष 17, अंक 2

20वां नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला शुरू

25 फरवरी से 4 मार्च, 2012

भारतीय पुस्तक बाजार को विश्व बाजार के साथ जोड़ने के अपने कार्यक्रम के एक भाग के रूप में नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया द्विवार्षिक नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले (न.दि.वि.पु.मे.) का आयोजन करता है। अपने 20वें संस्करण में प्रवेश करती एशिया और अफ्रीका की सबसे बड़ी यह प्रकाशन परिघटना भारत एवं विदेशों के सैकड़ों प्रकाशकों को एक-दूसरे के निकट लाती है। विश्व पुस्तक मेला के आयोजन की पहल ने अंतरराष्ट्रीय प्रकाशकों का ध्यान भारत की तरफ आकर्षित किया है। पहली बार 1972 में नई दिल्ली के विंडसर प्लेस में लगभग 200 प्रकाशकों के साथ शुरू हुआ नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले का यह आयोजन आज बढ़कर 1200 से अधिक प्रतिभागियों तक जा पहुंचा है जो प्रगति मैदान जैसे विशाल परिसर में आयोजित होता है।

20वां नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला प्रगति मैदान में 25 फरवरी से 4 मार्च 2012 तक आयोजित होगा। यह आयोजन प्रगति मैदान के हॉल सं. 1 से 14 में चलेगा। पुस्तक मेले का उद्घाटन मानव संसाधन विकास मंत्री माननीय श्री कपिल सिब्बल करेंगे।

'नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला' में थीम पर केंद्रित पुस्तकों की विशिष्ट प्रदर्शनी पाठकों का विशेष ध्यान आकर्षित करती है। इस बार पुस्तक मेले का थीम होगा–सिनेमा। 'प्वाइंट ऑफ व्यू : भारतीय सिनेमा पर पुस्तकों की अंतरराष्ट्रीय स्वत्वाधिकार प्रदर्शनी : भारतीय सिनेमा सौवें वर्ष की ओर' नाम से इस थीम को भारतीय सिनेमा के सौ वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में आयोजित किया जा रहा है। थीम के एक भाग के रूप में मेले में विशेष रूप से निर्मित मंडप में विश्व के सबसे बड़े बहुभाषी फिल्म उद्योगों में से एक हमारे

**पुस्तक मेला
ज्ञान का मोती
चलो बटोरें!**

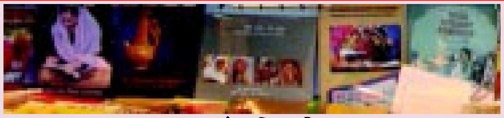

–आनंद बिल्थरे, बालाघाट, म.प्र.

संदर्भ : अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस, 21 फरवरी

भाषाओं की आकाशगंगा में प्रत्येक शब्द एक तारा है

मातृभाषाहीन जाति जाति नहीं कही जा सकती। मातृभाषा की रक्षा देश की सीमा की रक्षा से भी अधिक आवश्यक है, क्योंकि यह पर्वत और नदी से भी अधिक बलवती है।

–प्रख्यात विद्वान **टॉमस डेविस**

"मुझे यह कतई सहन नहीं होगा कि हिंदुस्तान का एक भी आदमी अपनी मातृभाषा को भूल जाए या इसकी हंसी उड़ाए। इससे शरमाए या उसे ऐसा लगे कि वह अपने अच्छे-से-अच्छे विचार अपनी भाषा में प्रकट नहीं कर सकता है। कोई भी देश सच्चे अर्थों में तब तक स्वतंत्र नहीं हो सकता जब तक वह अपनी भाषा में नहीं बोलता है।" मातृभाषा के संबंध में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के इस कथन में मातृभाषा का महत्व प्रकट होता है। पूरे विश्व में बोली जाने वाली लगभग 7000 भाषाओं में से लगभग 40% भाषाएं खतरे में हैं। इसी के मद्देनजर संयुक्त राष्ट्र के शैक्षणिक, वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक संगठन, यूनेस्को (UNESCO) की आम सभा ने 17 नवंबर, 1999 को अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस संबंधी प्रस्ताव को स्वीकृति दी और सन् 2000 से प्रत्येक वर्ष 21 फरवरी को यह दिवस मनाया जाने लगा। पूरे विश्व में भाषायी और सांस्कृतिक विविधता तथा बहुभाषिकता को बढ़ावा देने तथा भाषाओं के संरक्षण के उद्देश्य से यह दिवस मनाया जाता है। इस दिवस को मनाए जाने की पृष्ठभूमि बांग्लादेश (तब पाकिस्तान) में फूटा 1952 का भाषा आंदोलन था, जिसमें वहां के छात्रों ने बांग्ला भाषा को पहचान दिलाने के लिए लड़ाई लड़ी थी और जिसमें कुछ छात्र शहीद हो गए थे।

हमारी भाषा हमारा प्रतिबिंब है।

–महात्मा गांधी

पिछले पृष्ठ से जारी...विश्व पुस्तक मेला

फिल्म उद्योग की सौ वर्ष की यात्रा को, एक प्रदर्शनी में, सिनेमा पर हिंदी, अंग्रेजी एवं अन्य भारतीय भाषाओं में लिखी पुस्तकों के प्रदर्शन के जरिये दिखाया जाएगा। मंडप में फिल्म उद्योग से जुड़े विशिष्ट व्यक्तियों का आगमन तो होगा ही, साथ ही थीम पर चर्चा, संवाद एवं कार्यशाला का आयोजन भी किया जाएगा। मेले के दौरान कुछ चुनिंदा फिल्मों का प्रदर्शन भी किया जाएगा।

इसी तरह, मेले के दौरान बाल मंडप में आयोजित की जाने वाली गतिविधियां भी विशिष्ट आकर्षण होंगी। प्रगति मैदान के हॉल नं. 14 में ने.बु.ट्र. के अनुभाग, राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र के द्वारा यहां प्रतिदिन 11 से 1 बजे तक तथा 3.30 से 5.30 बजे तक बच्चों के लिए पुस्तक आधारित मनोरंजक गतिविधियां, कार्यशालाएं एवं बाल साहित्य संबंधी संगोष्ठी व चर्चाएं होंगी। दिनांक 25-26 फरवरी को 'माई लिटिल इंडिया' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित होगी।

इस बार का पुस्तक मेला पूर्वापेक्षा और बड़ा तथा बेहतर होगा। यह भारत के मिले-जुले और समृद्ध प्रकाशन व्यवसाय को प्रदर्शित करने का सही अवसर होगा ऐसा कहा जा सकता है।

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया आप सभी को नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला के इस विशिष्ट 40वें वर्ष के आयोजन में भाग लेने के लिए आमंत्रित करके हर्ष का अनुभव करता है।

अब तक आयोजित विश्व पुस्तक मेले : एक नजर में

क्रम.	*वर्ष*	*स्थान*	*क्षेत्रमाप (मीटर)*	*भागीदारी*
पहला	1972	विंडसर प्लेस	7,780	200
दूसरा	1976	प्रगति मैदान	7,700	266
तीसरा	1978	प्रगति मैदान	12,000	554
चौथा	1980	प्रगति मैदान	16,800	450
पांचवां	1982	प्रगति मैदान	21,000	540
छठा	1984	प्रगति मैदान	20,000	561
सातवां	1986	प्रगति मैदान	20,000	600
आठवां	1988	प्रगति मैदान	21,000	625
नौवां	1990	प्रगति मैदान	22,000	625
दसवां	1992	प्रगति मैदान	24,000	849
ग्यारहवां	1994	प्रगति मैदान	26,000	984
बारहवां	1996	प्रगति मैदान	32,000	948
तेरहवां	1998	प्रगति मैदान	21,000	1036
चौदहवां	2000	प्रगति मैदान	29,000	1281
पंद्रहवां	2002	प्रगति मैदान	25,000	1065
सोलहवां	2004	प्रगति मैदान	36,000	1240
सत्रहवां	2006	प्रगति मैदान	38,000	1293
अठारहवां	2008	प्रगति मैदान	46,200	1343
उन्नीसवां	2010	प्रगति मैदान	42,000	1200

पिछले पृष्ठ से जारी...अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस

विदित हो कि यूनेस्को प्रत्येक मातृभाषा दिवस पर किसी विषय को 'थीम' के रूप में तय करता है और अपने मुख्यालय, पेरिस (फ्रांस) में उससे संबंधित कार्यक्रमों का आयोजन करता है। सन् 2002 में यूनेस्को ने 'भाषायी विविधता : 3000 भाषाएं खतरे में' को थीम बनाया था। 2004 में 'बाल शिक्षण', 2005 में 'ब्रेल और चिह्न भाषाएं', 2006 में 'भाषाएं एवं साइबरस्पेस' तथा 2007 में 'बहुभाषिक शिक्षा' को थीम बनाया गया था। 2008 को अंतरराष्ट्रीय भाषा वर्ष के रूप में मनाया गया। 2010 को 'संस्कृति के पुनर्मेल के लिए अंतरराष्ट्रीय वर्ष' के रूप में मनाया गया।

सन् 2002 में अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस पर जारी नारा

"जब भी हम एक भाषा को खोते हैं हम विश्व की एक दृष्टि खोते हैं।"

—डेविड क्रिस्टल, प्रख्यात भाषाविद्

वर्ष 2001 की जनगणना के अनुसार, 30 भाषाएं 10 लाख से अधिक आबादी द्वारा बोली जाती है, 60 भाषाएं एक लाख से अधिक लोग, जबकि 122 भाषाओं को 10 हजार से अधिक लोग बोलते हैं।

1961 की जनगणना में भारत में 1,652 भाषा और बोलियों की पहचान हो पाई थी। 1991 की जनगणना में मातृभाषा के रूप में यह संख्या 1,567 आंकी गई।

भारत के संविधान में भारत की आधिकारिक भाषा के रूप में 22 भाषाओं को मान्यता प्रदान की गई है।

मिसाल

सरकारी स्कूल में कलक्टर की बिटिया!

न कभी देखा, न कभी सुना पर यह सच है कि तमिलनाडु के इरोड जिले के पंचायत यूनियन प्राइमरी स्कूल में वहां के कलक्टर की 8 वर्षीया बेटी गरीब बच्चों के साथ पढ़ाई कर रही है। दूसरी कक्षा में पढ़ने वाली गोपिका स्लेट पर अन्य बच्चों के साथ जमीन पर बैठकर लिखना सीख रही है। कलक्टर डॉ. आर. आनंदकुमार ने स्वयं भी अपने बालपन में तमिल माध्यम के सरकारी स्कूल में पढ़ाई की थी। कलक्टर की इस पहल से अन्य सरकारी अधिकारियों-कर्मचारियों में भी अपने बच्चों को सरकारी स्कूल में पढ़ाने की प्रेरणा मिल रही है।

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया से प्रकाशित नवसाक्षर साहित्यमाला की नवीनतम पुस्तकें

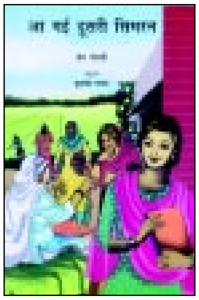

आ गई दूसरी सिमरन
प्रेम गोरखी
अनु. : फूलचंद मानव पृ. 18 ` 15.00
शिक्षा का महत्व समझाती एक रोचक पुस्तक।

कल्लन बाबू
पुष्पा सिंह 'विसेन' पृ. 12 ` 13.00
कहानी का केंद्रीय पात्र समरू और भुवरी की पांच संतानों में से सबसे बड़ा बेटा कलुवा है। किस प्रकार कलुवा अपने मालिक के बेटे शंभू की मदद से एक सरकारी दफ्तर में नौकरी मिलने पर कल्लन बाबू बना।

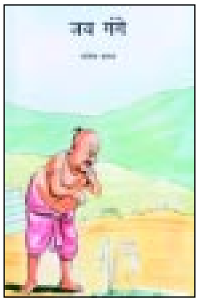

जय गंगे
राजेन्द्र यादव पृ. 18 ` 15.00
नल की टूटी पाइप से निकले पानी के सैलाब को बस्ती के धूर्त पंडित ने गंगा मैया के 'प्रकट' होने की घोषणा कर दी और सारे बस्ती वाले बोल उठे–जय गंगे! अंधविश्वास पर चोट करती प्रेरक कहानी।

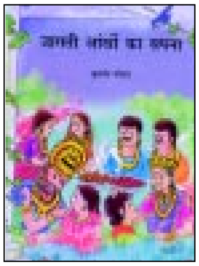

जागती आंखों का सपना
कुलवंत कोछड़ पृ. 14 ` 14.00
कहानी बताती है कि किस प्रकार एक राजा अपने बीमार पुत्र की मृत्यु के पश्चात जीवन और मृत्यु के रहस्य को समझ गया।

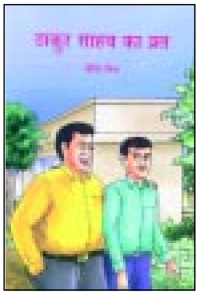

ठाकुर साहब का व्रत
गोविंद मिश्र पृ. 12 ` 13.00
व्रत रखना कोई हंसी-मजाक नहीं, यह ठाकुर साहब ने व्रत रखकर जाना, एक रोचक कहानी।

नतमस्तक
वंदना पुष्पेंद्र पृ. 14 ` 14.00
कमलेश नाम की एक विधवा स्त्री ने कैसे अपने दो-दो बच्चों को पाला-पोसा, स्वयं भी साक्षर होते हुए बच्चों को भी शिक्षित किया, एक प्रेरणाप्रद संघर्ष गाथा।

नुस्खा
लाल सिंह
अनु. : सुनीता पृ. 12 ` 13.00
जब अपने पर पड़ी तो उक्ति चरितार्थ हुई। रोचक कहानी।

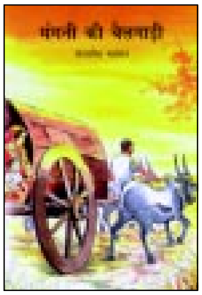

मंगनी की बैलगाड़ी
गोदावरीश महापात्र
अनु. : अरुण होता पृ. 16 ` 13.00
कहानी बताती है कि कैसे औद्योगिक क्रांति के चलते शहर में मोटरगाड़ी आने से मंगनी को बेरोजगारी और भुखमरी का सामना करना पड़ा और अंत में वह मृत्यु को प्राप्त हो गया।

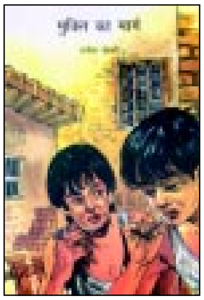

मुक्ति का मार्ग
अनीता चौधरी पृ. 20 ` 12.00
बालश्रम जैसी अमानवीय परंपरा के निषेध को दर्शाती एक सशक्त और मार्मिक रचना।

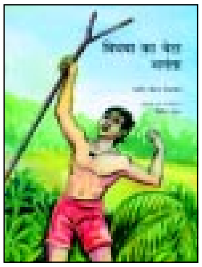

विधवा का बेटा अनंता
फकीरमोहन सेनापति
अनु. : अरुण होता पृ. 24 ` 25.00
विधवा के बहादुर बेटा अनंता की कहानी हमें बताती है कि किस प्रकार अनंता ने डूबते गांव को बचाने के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी।

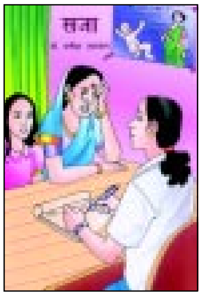

सजा
डॉ. यतीश अग्रवाल पृ. 16 ` 14.00
प्रस्तुत कहानी में किशोरावस्था में हुई भूल के कारण एच.आई.वी. से ग्रस्त लड़की का मार्मिक चित्रण प्रस्तुत किया गया है।

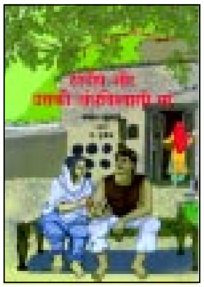

हरदीप और उसकी अंधविश्वासी मां
भगवंत रसूलपुरी पृ. 20 ` 15.00
अंधविश्वास या जादू-टोने से बच्चे नहीं होते, वैज्ञानिक सोच को केंद्र में रखकर लिखी गई रोचक कहानी।

पुस्तक और पुस्तक मेला

चल पुस्तक मेले में चल

रतनसिंह 'जौनसारी'

पुस्तक पढ़कर प्राप्त करूंगा
ज्ञान और विद्या का बल
चल पुस्तक मेले में चल।
कथा-कहानी वाली पुस्तक
नाना-नानी वाली पुस्तक
बिजली-पानी वाली पुस्तक
राजा-रानी वाली पुस्तक
जो दुनिया को सबक सिखाए
हिंदुस्तानी वाली पुस्तक
इनको पढ़कर खड़ा करूंगा
मैं सपनों का राजमहल
चल पुस्तक मेले में चल।
दूध-बतासा वाली पुस्तक
हिंदी भाषा वाली पुस्तक
पूर्ण पिपासा वाली पुस्तक
पूरी आशा वाली पुस्तक
जो दुनिया की सैर कराए
भाभा-नासा वाली पुस्तक
इनको पढ़कर शांत करूंगा
जिज्ञासा की उथल-पुथल
चल पुस्तक मेले में चल।
सांझ-सकारे वाली पुस्तक
चांद-सितारे वाली पुस्तक
घर-चौबारे वाली पुस्तक
मिट्टी-गारे वाली पुस्तक
जो दुनिया को एक बना दे
भाईचारे वाली पुस्तक
बजे प्रेम की वंशी घर-घर
उगे ज्ञान की नई फसल
चल पुस्तक मेले में चल।

देहरादून, उत्तराखंड

पुस्तक मेला जिंदाबाद

डॉ. जगदीशचंद्र शर्मा

हर पुस्तक में है संवाद
पुस्तक मेला जिंदाबाद!
आओ पुस्तक मेले में
खूब पुस्तकें आई हैं
तरह-तरह के विषयों की
ढेर पुस्तकें छाई हैं।
हर पुस्तक है मीठी याद
पुस्तक मेला जिंदाबाद!
आओ मिलें लेखकों से
चर्चाएं कर लें, सुन लें
कभी चलें कवि-गोष्ठी में
कभी कार्यशाला चुन लें।
चखें कई रुचियों का स्वाद
पुस्तक मेला जिंदाबाद!
आओ अपनी मनचाही
मोल पुस्तकें ले आएं
लापरवाही को कर दें
गोल, पुस्तकें ले आएं।
समय न हो बर्बाद
पुस्तक मेला जिंदाबाद!

गिलूंड, राजस्थान

जग में अपना नाम कर ले

बद्री प्रसाद वर्मा अनजान

पढ़ पढ़ पढ़ तू पढ़ ले
लिखना-पढ़ना तू सीख ले
पढ़कर ज्ञानी तू बन जा
जग में अपना नाम कर ले।

पुस्तक को तू बना ले साथी
पुस्तक का तू ज्ञान कर ले
पुस्तक में सब मिल जाएगा
पुस्तक को मन से पढ़ ले।

शिक्षा की तू अपने मन में
लौ जला ले लौ जला ले
शिक्षक को तू अपना
गुरु बना ले गुरु बना ले।

धन, दौलत सब लूट जाएंगे
शिक्षा न कोई लूट पाएगा, जान ले
इसलिए पढ़-लिखकर तू
अपना सोया भाग्य जगा ले।

गोलाबाजार, गोरखपुर, उ.प्र.

पुस्तक मेला धूम मचाए
पापा पुस्तक अच्छी लाए
रोज पढ़ने को मिलती पुस्तक
पढ़कर हमको ज्ञान भी आए।

—गोपीनाथ कालभोर, खंडवा, म.प्र.

वसंत के रंग, कविताओं के संग

गीत गाएं

रुद्रपाल गुप्त 'सरस'

आ गया नव वर्ष आओ, साथ मिलकर गीत गाएं
मीत बनकर मिलें सबसे, सबको अपना मीत पाएं।

सारा ही संसार सुखमय, भाव हममें यह भरा हो
भाग्य भारत का बनेगा, यह हमारा आसरा हो
देखकर अपने विगत को, हम सुधारें स्वयं आगत
इस तरह नव वर्ष का हम, स्वच्छ मन से करें स्वागत
दौड़ती इस दौड़ में हम, दिग्भ्रमित-से हो न जाएं
आ गया नव वर्ष आओ, साथ मिलकर गीत गाएं।

अनमने मन से ही नहीं कुछ, कार्य अपना सिद्ध होता
उत्साह पूरा हो अगर तो, सदा सब कुछ साध्य होता
मार्ग रुकता भ्रांतियों से, कूटनीतिक क्रांतियों से
हम अडिग क्या डिग सकेंगे, मदभरी इन आंधियों से
आंतरिक बल को दिखाएं, नीति-नियमों को निभाएं
आ गया नव वर्ष आओ, साथ मिलकर गीत गाएं।

हर्ष अपने में छिपा है, उत्कर्ष अपने साथ है
ज्ञान में विज्ञान में ऊंचा, हमारा माथ है
मंद गति से ही सही, हम सदा चलते रहें
दृष्टि हो निज लक्ष्य पर, कदम भी मिलते रहें
याद रखें सफलताएं, भूल को हम मत भुलाएं
आ गया नव वर्ष आओ, साथ मिलकर गीत गाएं।

सण्डीला, हरदोई, उत्तर प्रदेश

नया वर्ष है
नई उमंगें
नया जोश है
नई तरंगें
आ, भारत मां का
अभिषेक करें हम
नया क्षितिज है
नई पतंगें।

–आनंद बिल्थरे, बालाघाट, म.प्र.

प्यार सभी से करना सीखें

ठाकुरदास कुल्हारा, *जबलपुर, म.प्र.*

लेकर मात-पिता से सीखें
अच्छा जीवन जीना सीखें
पढ़-लिख अपने पाठ सभी हम
विविध ज्ञान गुरुजन से सीखें
नफरत-बैर-बुराई से हम
सदा दूर ही रहना सीखें
झूठ-कपट-छल-छद्‍म से बचकर
राह सत्य की चलना सीखें
पाना है जीवन में कुछ तो
त्याग-समर्पण करना सीखें
है संघर्ष नाम जीवन का
कर्मशील हम बनना सीखें
अपने लिए सभी जीते हैं
औरों के हित जीना सीखें
बड़े-बुजुर्गों को हम अपने
नमन सदा सब करना सीखें
हमें ढेर-सा प्यार मिलेगा
प्यार सभी से करना सीखें।

चाहिए

प्रकाशचंद्र एम. जोशी, *बीजापुर, कर्नाटक*

'प' से पढ़ना
'ल' से लिखना
'ह' से हंसना चाहिए
'म' से मंदिर
'म' से मस्जिद
'च' से चर्च
'ग' से गुरुद्वारा
जाना चाहिए
हिंदू-मुस्लिम-सिख-ईसाई
आपस में सब भाई-भाई
हम भारत के रहने वाले
सबकी भलाई चाहिए।

हर दम मुस्काते फूल

बद्री प्रसाद वर्मा अनजान

अपनी खुशी देकर
हर दम मुस्काते फूल
मधुमक्खी को देखकर
फूले नहीं समाते फूल।

भौंरों और तितलियों से
अपना प्यार जताते फूल
अपनी कोमलता को
हर वक्त दर्शाते फूल।

पूजा-पाठ हर समारोह में
सबके काम आते फूल
बनकर माला एक साथ
गले का हार बन जाते फूल।

कोई दिन में खिलता है
कोई रात में खिलता फूल
मुस्कानों से अपनी
सबकी झोली भरता फूल।

गोरखपुर, उत्तर प्रदेश

किताबें जिंदगी के अंधियारे में जगमगाते दीपक हैं।

किताबें गाती हैं, गुनगुनाती हैं
हमारी ओर आशा भरी निगाहों से तकती हैं
चलो किताबों से बतियाने
कि किताबें हमें बुलाती हैं। **दीपक गुप्ता**, ने.बु.ट्र.

किताबें मन के बंद दरवाजे खोलती हैं
ताजा हवा घोलती हैं
जीवन में रंग भरती हैं
मौन रहकर भी बहुत कुछ कहती हैं। **दीपक गुप्ता**, ने.बु.ट्र.

दूर क्षितिज से जब हुआ आना बंद प्रकाश
दीपक ने आकर कहा—मैं हूं तेरे पास।
पं. गिरिमोहन गुरु, होशंगाबाद, मध्य प्रदेश

बिन शिक्षा है जीवन सूना
शिक्षा ज्ञान बढ़ाती दूना।
रूपनारायण काबरा, जयपुर, राजस्थान

साक्षरता ऐसा गुण है जो अज्ञानता के अवगुण को सदा के लिए दूर कर देता है।
—**डॉ. अंजना अनिल**, अलवर, राजस्थान

पाठकीय प्रतिक्रिया

- **साक्षरता संवाद : जनवरी 2012 :** अंक बहुत अच्छा लगा। मुखपृष्ठ पर बापू एवं टैगोर की संदर्भित तस्वीर के साथ 'मुबारक नव मंगलमय वर्ष' बढ़िया लगा। 'विश्व हिंदी दिवस' के परिप्रेक्ष्य में 'देहरि भई विदेश' पुस्तक में से महादेवी वर्मा के संस्मरण मन को भा गए। कविताएं स्तरीय थीं और अंत में 'साइकिल वाली दीदी' बहुत बढ़िया लगी। अद्वितीय एवं निराला लगा सब कुछ।
हेम किरण, रोपड़, पंजाब

- 'राष्ट्रगान के सौ वर्ष' जानकारी से परिपूर्ण है। 'मनुष्य' कविता-अंश प्रेरणाप्रद है। गीत व कविताएं मन को छूती हैं। आठ पृष्ठों में इतनी सुंदर और उपयोगी रचनाएं प्रस्तुत करने हेतु साधुवाद!
प्रेम बोहरा, *संपा.*—मित्र संगम पत्रिका, दिल्ली

- यह देखकर प्रसन्नता होती है कि पत्रिका रोचक ही नहीं प्रेरक भी है। नवसाक्षरों के लिए तो यह उपयोगी है ही छात्रों एवं सामान्य पाठकों को भी यह रुच रही है। अंक में राष्ट्रगान के सौ वर्ष तथा लुई ब्रेल पर प्रकाशित आलेख एवं कविताओं की वजह से यह अंक विशेष बन गया है।
शिवकुमार खंडेलवाल, सोनीपत, हरियाणा

- **दिसंबर '11 :** डॉ. राजेंद्र प्रसाद और चक्रवर्ती राजगोपालाचारी की जीवनी तथा कविताओं की सुंदर प्रस्तुति खूब पसंद आई।
बद्री प्रसाद वर्मा अनजान, गोरखपुर, उ.प्र.

- **सां. सं.** अब सामयिक एवं सारगर्भित संक्षिप्त रचनाओं के लिए जाना जाने लगा है। यह अंक भी पूर्व अंकों की भांति संक्षिप्त होते हुए भी सफल और सार्थक अंक प्रमाणित हुआ। जीवनियां सामयिक थीं; लघुकथाएं, कविताएं एवं अन्य रचनाएं भी श्रेष्ठ थीं। 'अनोखे स्कूल' की जानकारी अनोखी एवं आह्लादित करने वाली लगी। *पुनश्च :*
जनवरी अंक भी प्राप्त हुआ। **सा. सं.** का हर अगला अंक पिछले अंक को पछाड़ता नजर आता है। संपूर्ण पत्रिका का संपादन एवं प्रस्तुतीकरण किसी साधक के सधे हाथ का कमाल लगता है।
ओम प्रकाश 'मंजुल', बरेली, उ.प्र.

- **नवंबर '11 :** मौलाना आजाद एवं पं. नेहरू से संबंधित रचनाएं प्रेरणाप्रद लगीं। बाल दिवस पर विशेष काव्य प्रस्तुति अच्छी थी। नवसाक्षरों के लिए लिखी रचनाएं सरल एवं उपयोगी हैं।
आनंद बिल्थरे, बालाघाट, म.प्र.

- पत्रिका का श्रमपूर्ण संपादन सार्थक है। सूचना, विचार एवं साहित्य की त्रिवेणी से युक्त पत्रिका नवसाक्षरों के लिए ही नहीं बड़ों के लिए भी प्रेरक एवं उपयोगी है। इस महत कार्य हेतु बधाई!
शिक्षा बिन जीवन बेकार
शिक्षा जीवन का श्रृंगार
शिक्षा खुशियों का आधार
शिक्षा ही सबका उपचार।
भानुदत्त त्रिपाठी 'मधुरेश', उन्नाव, उ.प्र.

- मैं **साक्षरता संवाद** के उद्देश्य व लेखन शैली से अत्यधिक प्रभावित हुई हूं। **कुसुम शर्मा**, जयपुर, राजस्थान

- ठीक वेद मंत्रों जैसी बातें लेकर **सा. सं.** प्राप्त हो रहा है। आप सभी का साक्षरता के हित में यह प्रयास सराहनीय है।
डॉ. बी.पी. दुबे, सागर, म.प्र.

- अपने सहपाठी के यहां **सा. संवाद** पढ़ा। अच्छा और सफल, सार्थक प्रयोग लगा। साक्षरता की दिशा में आपका यह प्रयास सराहनीय है। **निर्मल आचार्य**, मथुरा, उ.प्र.

साक्षरता संवाद
ज्ञान की किरण
करे उजाला। **सुगन चंद्र नलिन**, गुना, म.प्र.

कृपया पत्रिका के अनुकूल शिक्षा, साक्षरता, पुस्तक एवं पठन-पाठन से संदर्भित रचनाएं ही भेजें—प्रेरक, उद्बोधक। साफ एवं पठनीय शब्दों में लिखें, रचनाएं संक्षिप्त भेजें। बाल रचनाएं कृपया ट्रस्ट की 'पाठक मंच बुलेटिन' पत्रिका में भेजें। —**संपा.**

काश! हम भी सब पढ़ जाते

रामप्रसाद शर्मा 'प्रसाद'

बर्तन मांजे
ढोर चराए
अक्षर-ज्ञान
सीख न पाए।

कदम-कदम पर
ठोकर खाते
धोखा खाकर
आंसू बहाते।

पाठशाला में
जा न पाए
मूरख जग में
हम कहाए।

पढ़ना-लिखना
हमें न आता
अक्षर-ज्ञान से
जुड़ा न नाता।

सिर धुन-धुन हैं
अब पछताते
काश! हम भी
सब पढ़ जाते।

चिट्ठी-पतरा
पढ़ते-लिखते
नहीं किसी का
पानी भरते।

कांगड़ा, हि.प्र.

कितने अक्षर धाम

डॉ. तारादत्त 'निर्विरोध'

अक्षर-अक्षर शब्द हैं, शब्द-शब्द तक अर्थ
ज्ञानराशि को छोड़कर दुनिया में सब व्यर्थ।

शब्द शक्ति से हैं सभी रंग-रूप-रस-राग
बिना शब्द जल यों लगे जैसे जलती आग।

सब इच्छाएं बलवती आंखों में यदि तेज
शब्दों में सुख-दुख बसें मन ने लिया सहेज।

मन जागा तो लिख गए भित्ति-भित्ति चितराम
स्वर-व्यंजन के साथ में कितने अक्षर धाम।

काले तख्ते पर बने सड़िया से आकार
ज्ञान शक्ति से हो रहा बात-बात विस्तार।

अक्षर की पहचान से शब्द चले उस पार
जहां खड़े हैं अर्थ जन, बदले लोकाचार।

पहले जन्मी कामना, फिर भावों का साथ
लिखने वाले हाथ ही सबसे ऊंचे हाथ।

दृष्टि घटी तो चेतना खोल गई सब पाट
आपस में जुड़ने लगे मन के पावन घाट।

जहां पास है ऊर्जा, इच्छा, अच्छे कर्म
पढ़ना-लिखना ही वहां जीवन का अब धर्म।

जयपुर, राजस्थान

साक्षरता

डॉ. रमाकांत श्रीवास्तव

पेड़ पुण्य का जब फलता है
मानव जीवन तब मिलता है
यह जीवन सार्थक होता है
साक्षरता से जब जुड़ता है
ज्ञानों में अति श्रेष्ठ ज्ञान जो
अक्षर-ज्ञान हुआ करता है
साक्षरता से वंचित मानव
बिना पूंछ का पशु बनता है
अपढ़ रह गया जो इस जग में
ठोकर ही खाता फिरता है
साक्षरता वह धन है प्यारे
घटे न जो दिन-दिन बढ़ता है
कोयल का कूजन साक्षरता
जीवन मधुऋतु बन रहता है।

अलीगंज, लखनऊ, उ.प्र.

साक्षर बनो

ओमप्रकाश बजाज

काला अक्षर भैंस बराबर
अब न तुम कहलाओ।

अंगूठा छाप की अपनी
अब तुम पहचान मिटाओ।

दुनिया आगे बढ़ती जा रही
पीछे न तुम रह जाओ।

अपनी मेहनत अपने बल पर
अपना भाग्य बनाओ।

लेनदेन में क्रय-विक्रय में
अब और न धोखा खाओ।

जीवन में खुशहाली लाने
साक्षरता अपनाओ।

साक्षरता की लहर चल रही
उसमें शामिल हो जाओ।

जबलपुर, म.प्र.

R. N.I. No. 65414/96
Postal Regd. No. DL-SW-1/4078/2012-14
Licence to post without prepayment
L. No. U(SW) 22/2012-14
Mailing date 25/26 same month
Date of publication 15/02/2012

शोक

कर्त्तार सिंह दुग्गल : ट्रस्ट के पूर्व निदेशक (1966 से 1972 तक) श्री दुग्गल का 26 जनवरी, 2012 को दिल्ली में निधन हो गया। वे पंजाबी, उर्दू, अंग्रेजी व हिंदी के विद्वान थे।

प्रो. सुकुमार अझिकोड : ट्रस्ट के पूर्व अध्यक्ष प्रो. अझिकोड का 24 जनवरी, 2012 को निधन हो गया। वे 1993 से 1996 तक ट्रस्ट के अध्यक्ष थे। वे मलयालम भाषा के विद्वान थे।

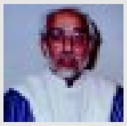

द्रोणवीर कोहली : हिंदी के प्रख्यात लेखक श्री कोहली का 24 जनवरी, 2012 को गुड़गांव में निधन हो गया। ट्रस्ट की नवसाक्षर साहित्यमाला में *पिंजरा* नाम से प्रकाशित पुस्तक के अलावा उनकी एक अन्य पुस्तक भी प्रकाशित है।

प्रेरणा

अनूठा प्रयोग 'खबर लहरिया'

'खबर लहरिया' उत्तर प्रदेश के बांदा और चित्रकूट जिलों से प्रकाशित होने वाला देश का पहला ग्रामीण अखबार है। इस अखबार को अनुसूचित जाति, जनजाति एवं पिछड़े वर्ग की महिलाएं निकालती हैं। ये महिलाएं अखबार के लिए खबरों का संकलन, लेखन, संपादन के अलावा इसके वितरण का भी काम स्वयं करती हैं। इस अखबार का उद्देश्य उन क्षेत्रों तक पहुंचना है जहां पढ़ने और मनोरंजन का कोई साधन नहीं है। यह पत्रकारिता क्षेत्र में पुरुष वर्चस्व के मिथक को भी तोड़ता है।

हाल ही में बिहार के सीतामढ़ी से भी इस अखबार का निकलना शुरू हुआ है। अखबार में विकास के मुद्दों, सरकारी योजनाओं, महिला मुद्दों, ग्रामीण व कस्बों की खबरें व मनोरंजन से जुड़ी सामग्री होती हैं। सीतामढ़ी में 'खबर लहरिया' का आरंभ 'निरंतर' नामक संस्था द्वारा किया गया है। अखबार की भाषा बज्जिका है।

'साक्षरता संवाद' के अंतिम दो पृष्ठ 7 और 8, नवसाक्षरों के लिए हैं। इसे अलग करके अन्य पठन सामग्री के साथ रखा जा सकता है।

संपादक : **बलदेव सिंह 'बद्दन'**
कार्यकारी संपादक : **दीपक कुमार गुप्ता**
उत्पादन सहयोग : **दीपक जैसवाल**

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070
ई-मेल: nbtindia@ndb.vsnl.net.in
वेबसाइट : www.nbtindia.org.in

पाठकों से अनुरोध है कि वे **साक्षरता संवाद** के बारे में अपने विचार संपादक को लिखें।

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 की ओर से सतीश कुमार, संयुक्त निदेशक (उत्पादन) द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित; तथा पुष्पक प्रेस प्रा.लि., 203-204, डी.एस.आई.डी.सी. शेड, फेज-I, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित।

एस.एस. इंटरप्राइजेज, प्रथम तल, जी.जी.-1/36बी, विकासपुरी, नई दिल्ली-110018 से टाइपसेट।

भारत सरकार के सेवार्थ

डाक वापसी की दशा में कृपया इस पते पर वापस करें :
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070